Self Respect

16-07-2014

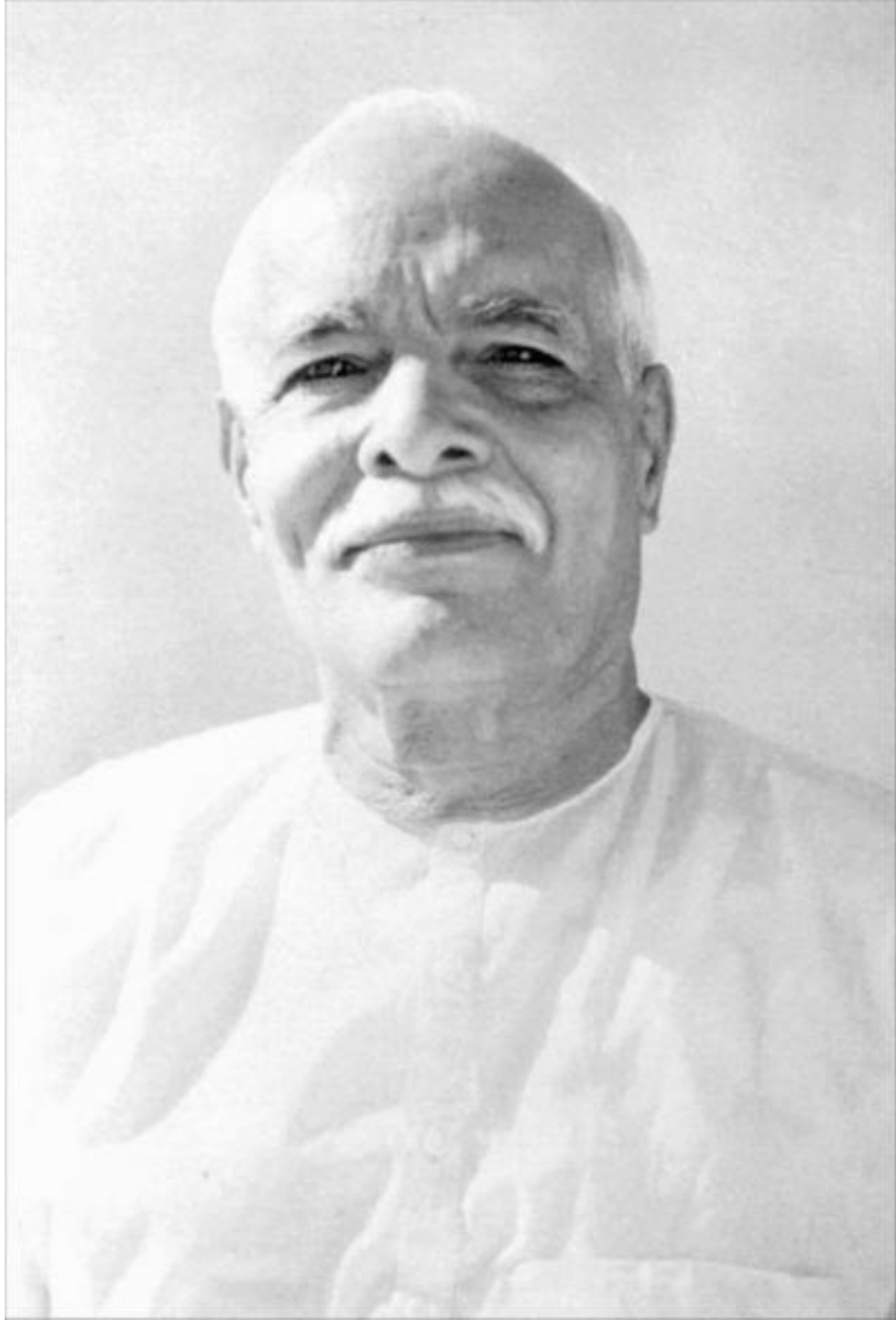

✓बेहद के बाप का प्यार अभी एक ही बार तुम बच्चों को मिलता है, जिस प्यार को भक्ति में भी बहुत याद करते हैं । बाबा, बस आपका ही प्यार चाहिए । तुम मात पिता.... तुम ही सब- कुछ हो । एक से ही आधाकल्प के लिए प्यार मिल जाता है । तुम्हारे इस रूहानी प्यार की महिमा अपरम्पार है । बाप ही तुम बच्चों को शान्तिधाम का मालिक बनाते हैं । अभी तुम दु :खधाम में हो ।

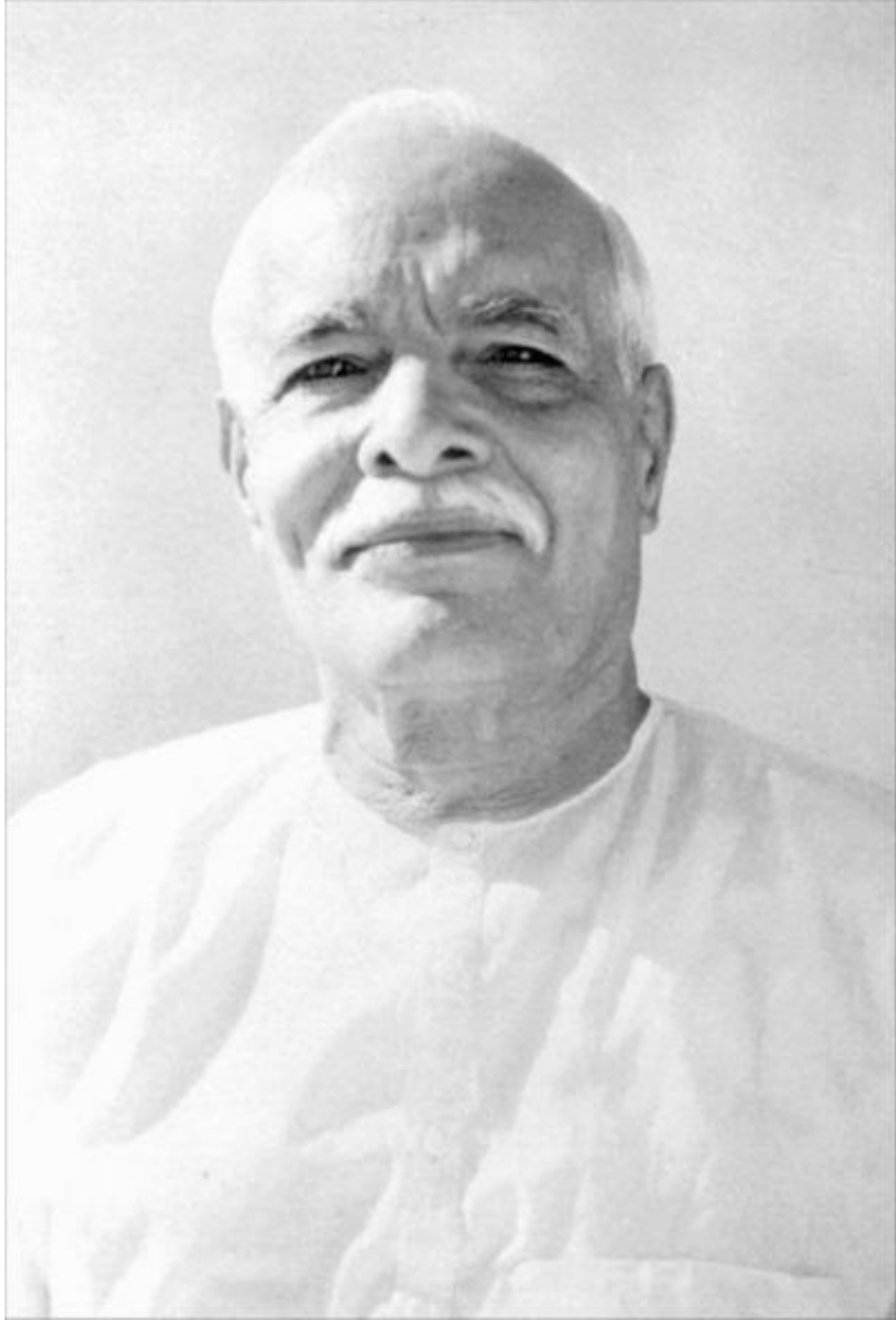

✓यह बाप का प्यार तुम बच्चों को एक ही बार मिलता है जो फिर अविनाशी हो जाता है । वहाँ तुम एक-दो से बहुत प्यार करते हो । अभी तुम मोहजीत बन रहे हो । सतयुगी राज्य को मोहजीत राजा, रानी तथा प्रजा का राज्य कहा जाता है । वहाँ कभी कोई रोते नहीं । दु :ख का नाम नहीं । तुम बच्चे जानते हो बरोबर भारत में हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस था, अब नहीं है क्योंकि अभी रावण राज्य है ।

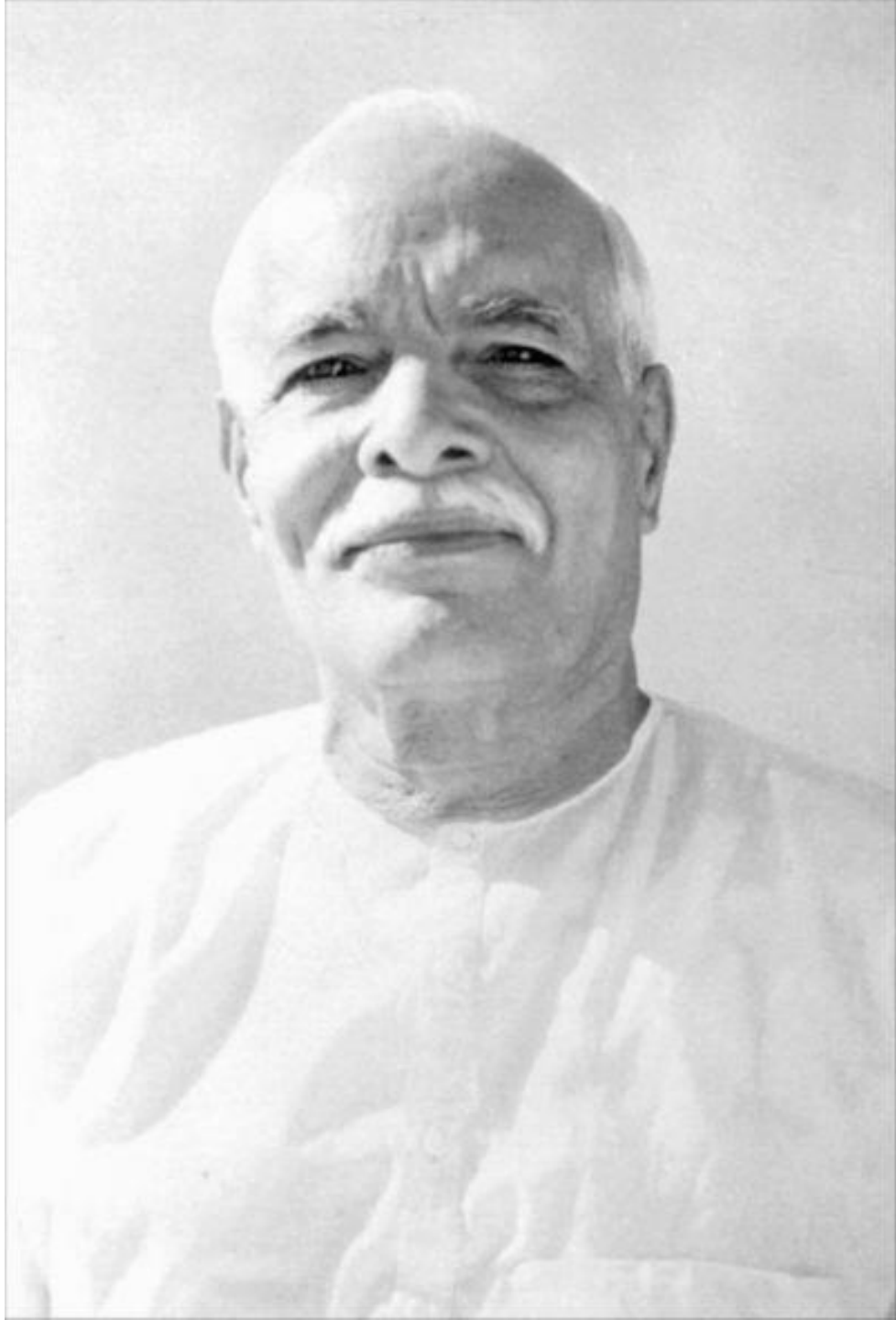

- ✓तुम्हारे सामने एम ऑबजेक्ट खड़ी है । मन्दिरों में भल जाते हैं परन्तु उनकी बायोग्राफी कुछ नहीं जानते । जैसे गुड़ियों की पूजा होती है ।
- ✓तुम पहले-पहले एक शिवबाबा की पूजा करते हो, जिसको अव्यभिचारी राइटियस पूजा कहा जाता है । फिर होती है व्यभिचारी पूजा ।
- ✓बुद्धि में याद है कि हम पहले-पहले मूलवतन में थे । वहाँ से यहाँ आते हैं शरीर लेकर पार्ट बजाने । पहले-पहले हम दैवी चोला लेते हैं अर्थात् देवता कहलाते हैं ।

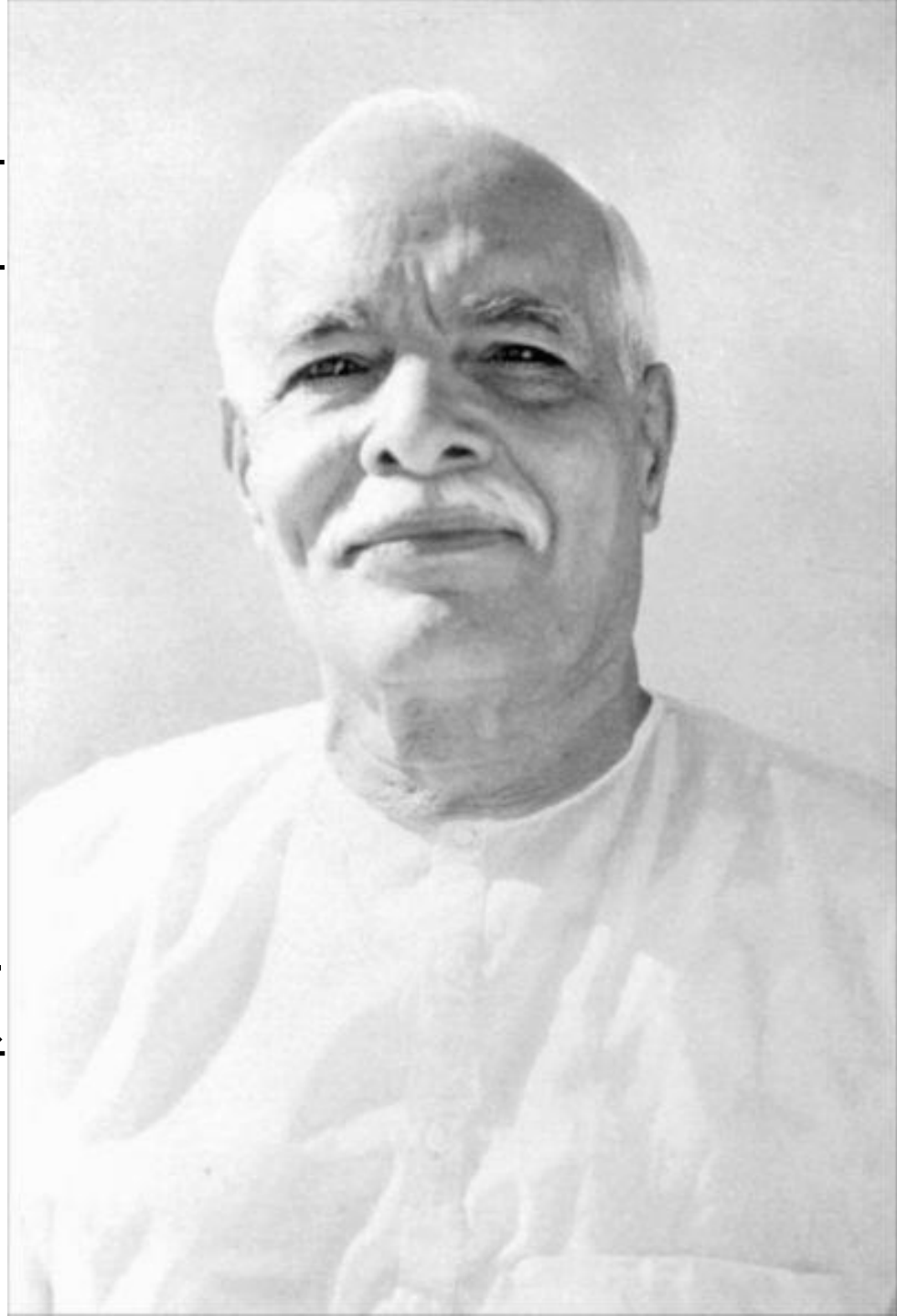

✓अब बाबा ने आकर आदि-मध्य- अन्त का नॉलेज तुम बच्चों को दिया है ।

✓ यह चक्र फिरता है । इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती महाराजा- महारानी विश्व के मालिक बनते हो

✓ऑलराउन्ड चक्र तुम ब्राह्मण ही लगाते हो । हम सो ब्राह्मण, सो देवता..... ।

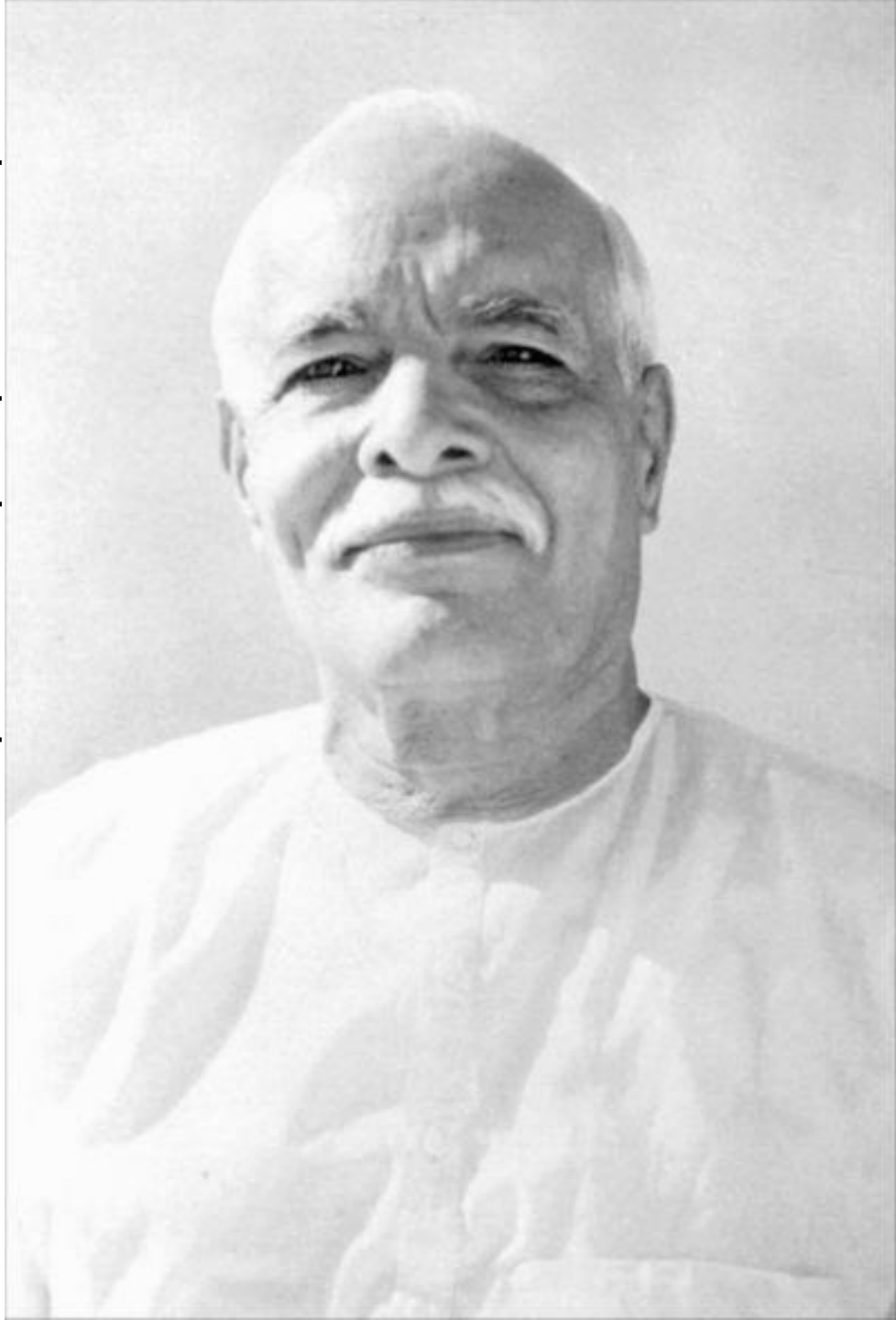

- ✓बाकी रावण राज्य में तुमको सब दु :ख ही देते हैं ना इसलिए बेहद के बाप को याद करते हैं । उनकी याद में प्रेम के आंसू बहाते हे साजन, कब आकर सजनियों से मिलेंगे? क्योंकि तुम सब हो भक्तियां । भक्तियों का पति हुआ भगवान् । भगवान् आकर भक्ति का फल देते हैं, रास्ता बताते हैं और समझाते हैं- यह 5 हजार वर्ष का खेल है । रचयिता और रचना के आदि- मध्य- अन्त को कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं । रूहानी बाप और रूहानी बच्चे ही जानते हैं । कोई मनुष्य नहीं जानते, देवतायें भी नहीं जानते । यह स्प्रिचुअल फादर ही जानते हैं । वह अपने बच्चों को बैठ समझाते हैं । और कोई भी देहधारी के पास यह रचयिता और रचना के आदि-मध्य- अन्त की नॉलेज हो न सके ।

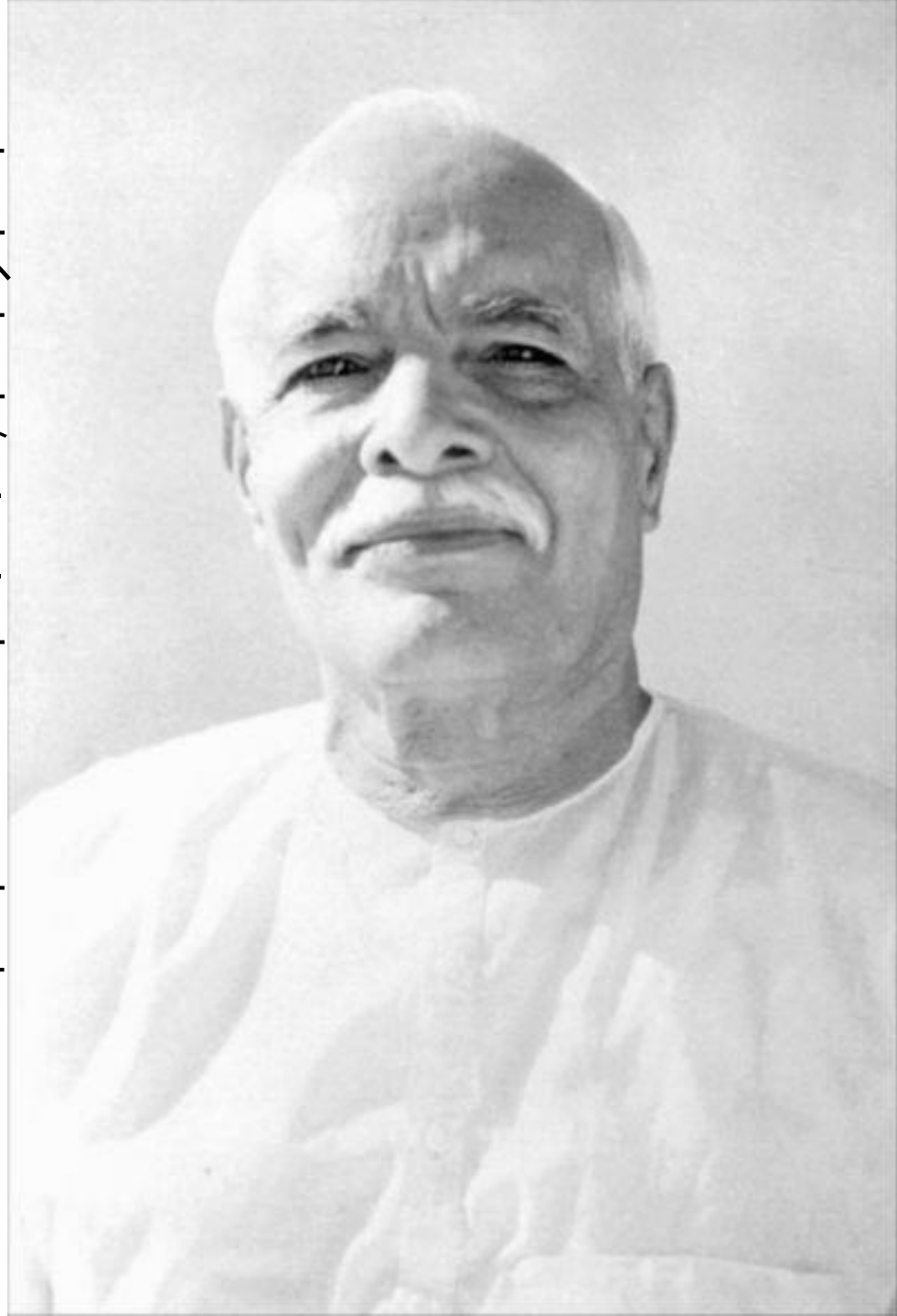

✓यह है ऊंच ते ऊंच पढ़ाई । इस टीचर को कोई जानते नहीं । वह सुप्रीम बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है । यह कोई नहीं जानते । बाप ही आकर अपना पूरा परिचय देते हैं । बच्चों को खुद पढ़ाकर फिर साथ में ले जाते हैं । बेहद के बाप का लव मिलता है तो फिर और कोई लव पसन्द नहीं आता । इस समय है ही झूठ खण्ड ।

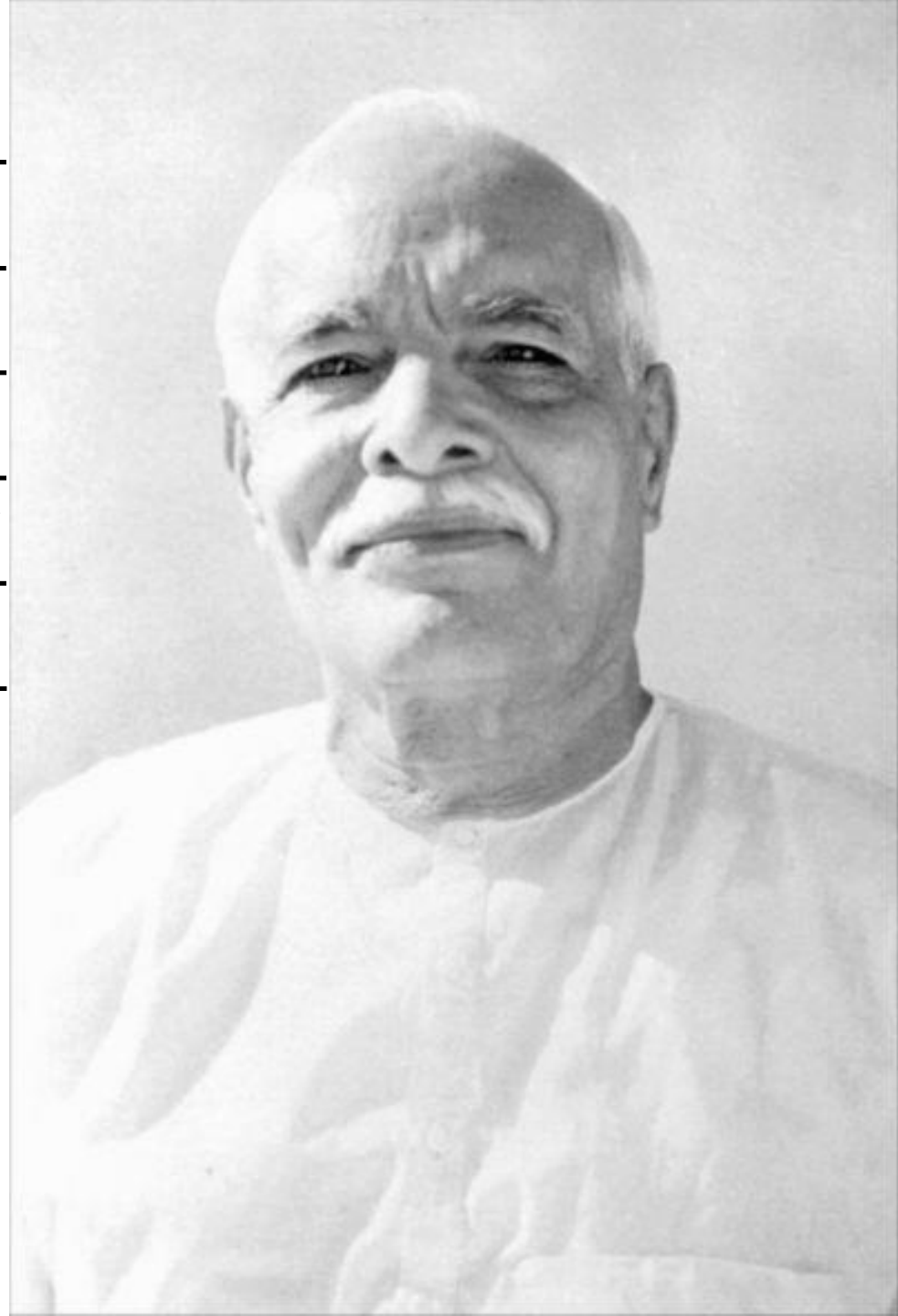

- ✓तुम हो आस्तिक, वह हैं नास्तिक । तुम धनी के बन बाप से वर्सा लेने का पुरूषार्थ करते हो । तुम्हारी माया के साथ गुप्त लड़ाई चलती है ।

- ✓जबसे रावण राज्य शुरू होता है तब से भक्ति के कर्मकाण्ड की बातें मनुष्य पढ़ते-पढ़ते नीचे आ जाते हैं, कहते हैं व्यास भगवान् ने शास्त्र बनाये, क्या-क्या बैठ लिखा है? भक्ति और ज्ञान का राज़ अभी तुम बच्चों ने समझा है ।

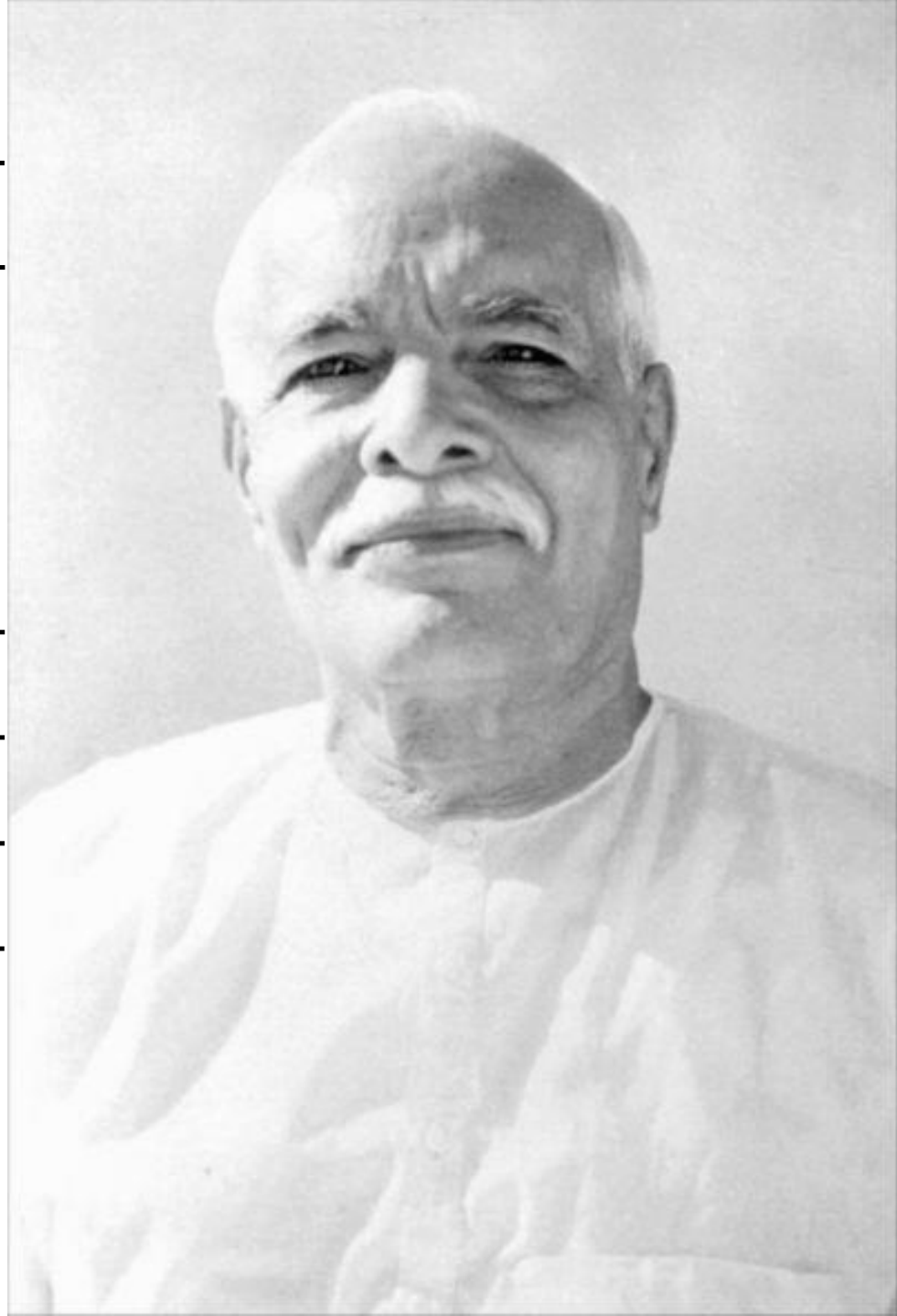

✓यह नॉलेज तुमको अभी ही मिलती है फिर सोर्स ऑफ इनकम हो जाती है । 21 जन्म कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहती है, जिसकी प्राप्ति के लिए पुरूषार्थ करना पड़े । उसको कहा जाता बाप का एक ही स्वर्ग है वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड । नाम ही है पैराडाइज़ । उनका बाप मालिक बनाते हैं । वह तो सिर्फ वन्डर्स दिखाते हैं, परन्तु तुमको तो बाप उसका मालिक बनाते हैं इसलिए अब बाप कहते हैं निरन्तर मुझे याद करो । सिमर- सिमर सुख पाओ, कलह कलेष मिटे सब तन के, जीवनमुक्ति पद पाओ ।

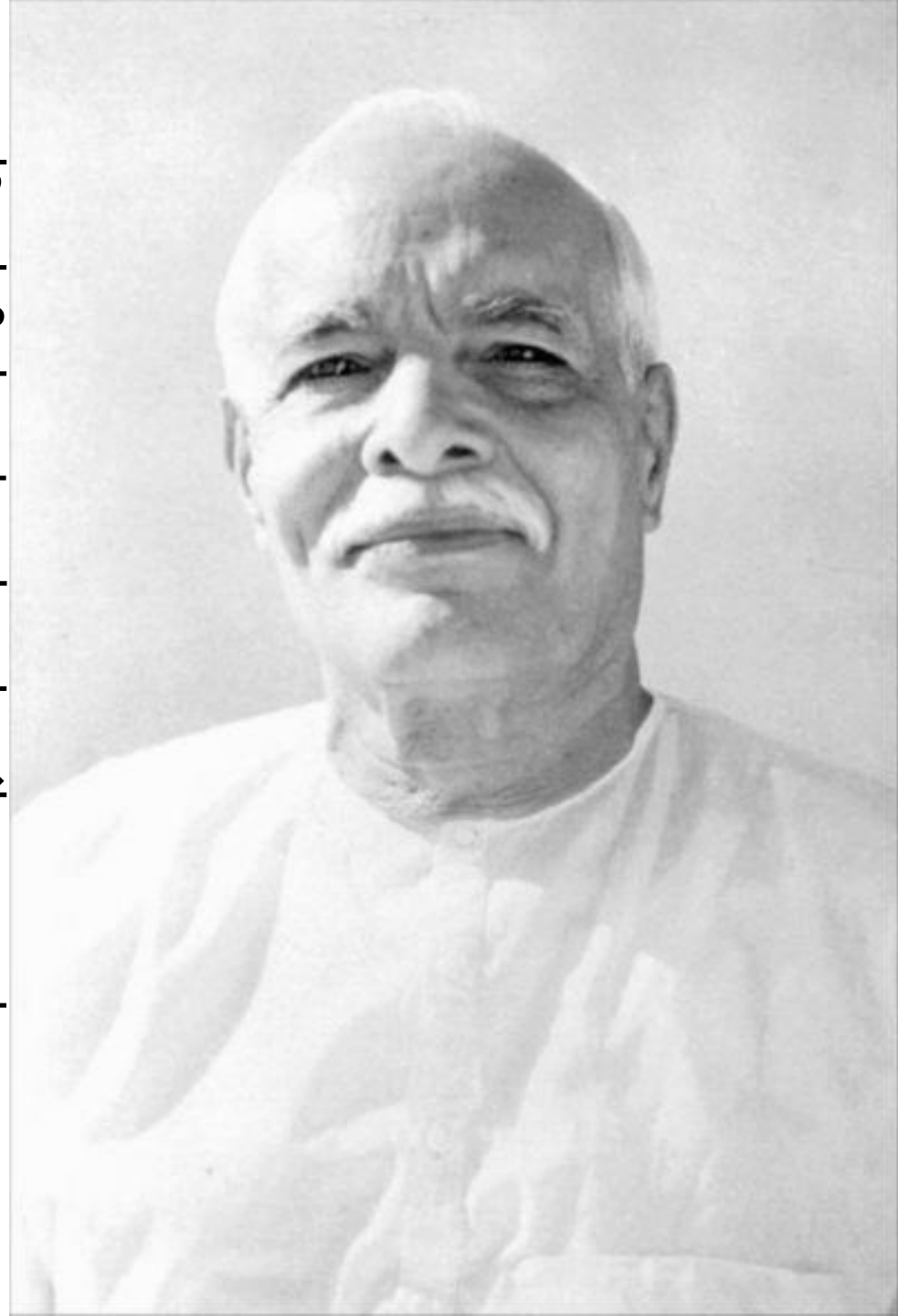

✓अभी तुम बाप को और रचना के आदि- मध्य- अन्त को जान गये हो । तुमको बाप का लव मिलता है । बाप नजर से निहाल कर देते हैं । सम्मुख आकर ही नॉलेज सुनायेंगे ना । इसमें प्रेरणा की तो कोई बात ही नहीं । बाप डायरेक्शन देते हैं, ऐसे याद करने से शक्ति मिलेगी । जैसे बैटरी चार्ज होती है ना । यह मोटर है, इसकी बैटरी डल हो गई है । अब सर्वशक्तिमान् बाप के साथ बुद्धि का योग लगाने से फिर तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे ।

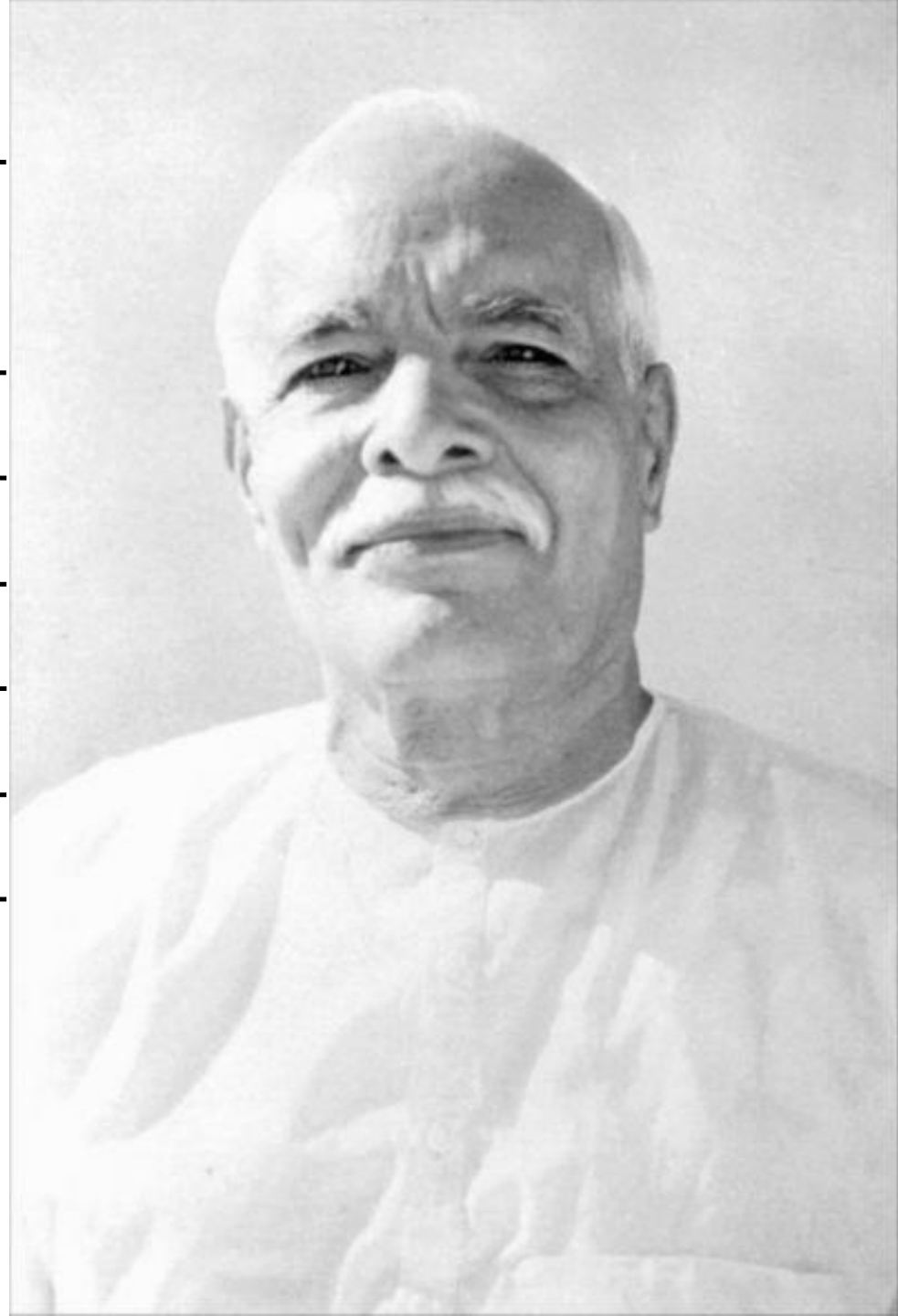

✓वरदान: हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ सदा रूहानी मौज में रहने वाली विशेष आत्मा भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात- पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉनिग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।